BA Part I (H)
Paper I

Dr Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धान्त => सामाजिक स्तरीकरण द्वारा समाज विभिन्न उच्च एवं निम्न समूहों में विभाजित एवं व्यवस्थित होता है तथा ये समूह परस्पर दूसरे से जुड़े होते हैं और सामाजिक एकता को बनाये रखते हुए समाज में स्थिरता कायम रखते हैं। सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धान्त को विभिन्न विद्वानों ने व्याख्या की है। यहां हम कार्ल मार्क्स के स्तरीकरण के सिद्धान्त को स्पष्ट करेंगे।

सामाजिक स्तरीकरण सिद्धान्त (संघर्ष सिद्धान्त – कार्ल मार्क्स)

कार्ल मार्क्स ने सामाजिक स्तरीकरण को समाज में होने वाले संघर्ष के आधार पर स्पष्ट किया है। अपनी पुस्तक Communist manifesto में इस सिद्धान्त को स्पष्ट किया है। उन्होंने लिखा है," आज तक जो भी समाज अस्तित्व में आये उनका इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।" उनके अनुसार प्रत्येक युग में सामाजिक वर्ग ~~उपस्थित रहे~~ उपस्थित रहे और उनमें परस्पर संघर्ष भी होता रहा है। प्राचीन काल में दो वर्ग स्वतंत्र और दास, कुलीन व अकुलीन, सामन्त और अर्द्ध-दास, अत्याचारी व पीड़ित वर्ग रहे हैं जिनमें संघर्ष होता रहा है। वर्तमान पूंजीवादी

समय में बुर्जुआ (पूंजीपति) एवं सर्वहारा (श्रमिक) इन दो वर्गों में संघर्ष होता रहा है। सामाजिक स्तरीकरण के आधार पर ही इन दो वर्गों में बांटा गया है। जो परस्पर एक दूसरे से उच्च एवं निम्न हैं। कार्लमार्क्स के अनुसार वर्गों का जन्म उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व के आधार पर होता है अर्थात् इसके आधार पर ही समाज में स्तरीकरण होता है. जो वर्ग उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण स्थापित करता है वह सामाजिक स्तरीकरण में उच्च तथा जो वर्ग साधनविहीन होते हैं उन्हें निम्न स्थिति प्राप्त होती है। वर्गों का स्वरूप उत्पादन के ढंग पर निर्भर करता है अर्थात् उत्पादन के ढंग में प्रौद्योगिकी के कौन से स्तर है।

शुम्पीटर के अनुसार मार्क्स की प्रमुख रुचि वर्गों के विकास में थी। बोटामोर कहते हैं कि मार्क्स सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तन लाने में वर्गों की भूमिका में रुचि रखता है। वर्तमान औद्योगिक एवं पूंजीवादी व्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व की दृष्टि सामाजिक स्तरीकरण में दो वर्गों का उदय हुआ एक बुर्जुआ (पूंजीपति) तथा दूसरा सर्वहारा (श्रमिक) वर्ग। पूंजीपति को अत्यधिक लाभ कमाने के लिए श्रमिक वर्ग को कम से कम लाभ देना चाहता है। कुछ समय के

लिए पूंजीपति वर्ग आर्थिक शक्ति के आधार पर राजनैतिक शक्ति को प्रभावित करते हैं तथा श्रमिक वर्ग के समाज को दबा देते हैं। चूंकि सामाजिक स्तरीकरण अर्थ, शक्ति, सत्ता एवं प्रतिष्ठा के आधार पर देखा जाता है इसलिए सामाजिक स्तरीकरण में श्रमिक वर्ग निम्न स्थिति में होता है। उद्योगों का केन्द्रीकरण, यातायात के साधनों का विकास, पूंजीपति एवं श्रमिकों के बीच आर्थिक एवं सामाजिक दूरी बढ़ने के कारण श्रमिक वर्ग में एकता एवं चेतना में वृद्धि होती है। इस वर्ग चेतना के फलस्वरूप संगठित होकर बुर्जुआ वर्ग से संघर्ष प्रारम्भ करते हैं और उन्हें अन्ततः सफलता प्राप्त होती है। मार्क्स के अनुसार आर्थिक कारण ही समाज में स्तरीकरण को जन्म देते हैं। आर्थिक लाभ अर्थात् उत्पादन के साधन के आधार पर ही समाज में स्तरीकरण होता है और समाज दो वर्गों बुर्जुआ एवं सर्वहारा वर्ग में विभाजित होता है।

कार्ल मार्क्स के अनुसार आर्थिक कारण ही

समाज के अन्य कारणों को प्रभावित करते हैं। धर्म, कला ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति, दर्शन एवं साहित्य सभी कुछ समाज की अर्थव्यवस्था से ही प्रभावित होते हैं। सामाजिक स्तरीकरण में जो दो वर्ग बुर्जुआ तथा सर्वहारा वर्ग परस्पर संघर्ष करते हैं तब तक जब तक वर्गविहीन समाज की स्थापना न हो जाए। मार्क्स का सामाजिक स्तरीकरण के संघर्ष सिद्धान्त समाज के स्तरीकरण को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

आलोचनाएं → सामाजिक स्तरीकरण के वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त की कुछ आलोचनाएं की है। जो इस प्रकार है —

(1) सामाजिक स्तरीकरण सिद्धान्त में मार्क्स ने आर्थिक कारणों को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया है। अन्य कारण जैसे राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक की उपेक्षा की है।

(2) मार्क्स ने यह नहीं स्पष्ट किया कि वर्गविहीन समाज में सामाजिक स्तरीकरण का क्या आधार होगा क्योंकि स्तरीकरण एक सार्वभौमिक तथ्य है।